एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जीरो बजट प्राकृतिक खेती

(*मुकेश कुमार यादव)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर (महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर)
* mukesh6161yadav@gmail.com

कैसे शुरू हुई भारत में जीरो बजट प्राकृतिक खेती –

भारत में इस खेती की शुरूआत सबसे पहले दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में हुई थी और धीरे–धीरे ये खेती भारत के अन्य राज्य में भी प्रसिद्व होने लगी है। इस खेती की शुरूआत कर्नाटक राज्य में सुभाष पालेकर ने स्टेट फार्मर्स एसोसिएशन कर्नाटक राज्य रैथा संघ (KRRS) और मेंबर ऑफ ला वाया कम्पेसिना (member off la Via Compassina) के साथ मिलकर की थी। इस समय कर्नाटक के करीब एक लाख किसानों ने इस खेती की तकनीक को अपना लिया है और अनुमान है कि आने वाले समय में ये संख्या और अधिक हो जाएगी।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती क्या है।

हमारे देश में कई किसानों ने जीरो बजट प्राकृतिक खेती (जेडबीएनएफ) के तहत खेती करना शुरू कर दिया है और काफी कम समय के अंदर ही जीरो बजट प्राकृतिक खेती हमारे देश में काफी लोकप्रिय भी होती जा रही है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती के तहत किसान केवल उनके द्वारा बनाई गई खाद और अन्य चीजों का प्रयोग खेती के दौरान करते है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती करने में करने भी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ती है। इस वक्त हमारे देश के कुछ राज्यों द्वारा जीरो बजट प्राकृतिक खेती को अपना लिया गया है और आने वाले समय में उम्मीद है कि ये खेती भारत के पूरे राज्यों में भी की जाने लगेगी।

क्यों रखा गया 'जीरो बजट प्राकृतिक खेती' नाम –

इस तकनीक के तहत खेती करने के लिए किसानों को बाजार से किसी भी प्रकार के केमिकल्स को खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती है। जिसके कारण जीरो बजट प्राकृतिक खेती करने के दौरान शून्य रूपए का खर्चा (zero net cost of production) आता है और इसलिए इस खेती को जीरो बजट प्राकृतिक खेती का नाम दिया गया है। हालांकि इस प्रकार की खेती करने के दौरान खाद बनाने में थोड़ा खर्चा आता है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के फायदे –

कम लागत लगती है – जीरो बजट प्राकृतिक खेती तकनीक के जरिए जो किसान खेती करते हैं उन्हें किसी भी प्रकार के केमिकल और कीटनाशकों तत्वों को खरिदने की जरूरत नहीं पड़ती है और इस तकनीक में किसान केवल अपने द्वारा बनाई गई चीजों का इस्तेमाल केमिकल की जगह करते हैं। जिसके चलते इस प्रकार की खेती करने के दौरान कम लागत है।

जमीन के लिए फायदेमंद –

केमिकल और कीटनाशकों तत्वों का इस्तेमाल खेती के दौरान इसलिए किया जाता है ताकि फसलों में किसी भी प्रकार का कीड़ा ला लग सके और फसल का अच्छे से विकास हो सके।

मुनाफा ज्यादा होता है–

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के तहत केवल खुद से बनाई कई खाद कस इस्तेमाल किया जाता है और ऐसा होने से किसानों को किसी भी फसल को उगाने में कम खर्चा आता है और कम लागत के कारण उस फसल पर किसानों को अधिक मुनाफा होता है।

जीवामृत / जीवमूर्ति –

जिवामिता या जीवमूर्ति की मदद से जमीन को पोषक तत्व मिलते हैं और ये एक उत्प्रेरक एजेंट(catalytic agent) के रूप में कार्य करता है, जिसके वजह से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की गतिविधि बढ़ जाती है और फसलों की पैदावार अच्छे से होती है। इसके अलावा जीवामृत की मदद से पेड़ों और पौधों को कवक और जीवाणु संयंत्र रोग होने से भी बचाया जा सकता है।

जीवामृत बनाने की विधि –

एक बैरल में 200 लीटर पानी डालें और उसमें 10 किलो ताजा गाय का गोबर, 5 से 10 लीटर वृद्व गाय का मूत्र, 2 किलो पल्स का आटा, 2 किलो ब्राउन शुगर और मिट्टी मिला दे। ये सब चीजों मिलाने के बाद आप इस मिश्रण को 48 घंटों के लिए छाया में रख दें। 48 घंटों तक छाया में रखने के बाद यह आपका ये मिश्रण इस्तेमाल करने के लिए तैयार हो जाएगा।

किस तरह से इस्तेमाल करें इस मिश्रण को –

एक एकड़ जमीन के लिए आपको 200 लीटर जीवामृत मिश्रण की जरूरत पड़ेगी और किसान को अपनी फसलों को महीनें में दो बार जीवामृत का छिड़काव देना होगा। किसान चाहें तो सिंचाई के पानी में इसे मिलकर भी फसलों पर छिड़काव दे सकते है।

बीजामृत / बीजामूर्ति –

इस उपचार का इस्तेमाल नए पौधे के बीज रोपण के दौरान किया जाता है और बीजामृत की मदद से नए पौधों की जड़ों को कवक, मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारी और बीजों की बीमारियां से बचाया जाता है। बीजामृत को बनाने के लिए गाय का गोबर, एक शक्तिशाली प्राकृतिक कवकनाश, गाय मूत्र, एंटी–बैक्टीरिया तरल, नींबू और मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है।

किस तरह से इस्तेमाल करें इस मिश्रण को –

किसी भी फसल के बीजों को बोने से पहले उन बीजों में आप बीजामृत अच्छे से लगा दें और ये लगाने के बाद उन बीजों को कुछ देर सूखने के लिए छोड़ दें। इन बीजों पर लगा बीजामृत का मिश्रण सूख जाने के बाद आप इनको जमीन में बो सकते हैं।

आच्छादन–मल्चिंग –

मिट्टी की नमी का संरक्षण करने के लिए और उसकी प्रजनन क्षमता को बनाए रखने के लिए मल्चिंग का सहारा लिया जाता है। मल्च प्रकिया के अंदर मिट्टी की सतह पर कई तरह के मटेरियल लगाए जाते है ताकि खेती के दौरान मिट्टी को जाता है और मिट्टी के आसपास और मिट्टी को इकट्ठा करके रखा जाता है, ताकि मिट्टी की जल प्रतिधारण क्षमता को और अच्छा बनाया जा सके।

स्ट्रॉ मल्च – स्ट्रॉ (भूसा) सबसे अच्छी मल्च सामग्री में से एक है और भूसे मल्च का उपयोग सब्जी के पौधों की खेती में अधिक किया जाता है। कोई भी किसान चावल के भूसे और गेहूं के भूसे का उपयोग सब्जी की खेती के दौरान कर अच्छी सब्जियों की फसल पा सकता है और मिट्टी की गुणवता को भी सही रखा सकता है।

लाइव मल्चिंग – लाइव मल्चिंग प्रक्रिया के अंदर एक खेत में एक साथ कई तरह के पौधे लगाए जाते है और ये सभी पौधे एक दूसरे पौधों की बढ़ने में मदद करते है। उदाहरण के लिए, कॉफी और लौंग के पेड़ हो सकते है। इसलिए लाइव मल्चिंग प्रक्रिया के अंदर ऐसे दो पौधे को एक साथ लगा दिया जाता है जिनमें से कुछ ऐसे पौधे होते है जो धूप लेने वाले पौधों को अपनी छाया प्रदान करते हैं और ऐसा होने से पौधा का अच्छे से विकास हो पता है।

व्हापासा – सुभाष पालेकर द्वारा लिखी गई किताबों के अंदर कहा गया है कि पौधों को बढ़ने के लिए अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है और पौधे व्हापासा यानी भाप की मदद से भी बढ़ सकते है। व्हापासा वह स्थिति होती है जिसमें हवा अणु हैं और पानी के अणु मिट्टी में मौजूद होते है। और इन दोनों अणु की मदद से पौधे का विकास हो जाता है।

अतः जीरो बजट किसान खेती किसानों के लिए बहूत कम लागत में अधिक उत्पादन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अतः किसानों को जीरो बजट खेती अपनानी चाहिए।